

डॉ. अगस्त कोकेल, नीतिवचन, सत्र 16

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 16 है, मूर्खों के साथ रहना, नीतिवचन 26।

नीतिवचन की पुस्तकों पर एक छोटे से चिंतन में आपका स्वागत है। हम नीतिवचनों के उन संग्रहों के बारे में बात कर रहे हैं जो सुलैमान के नाम पर बनाए गए हैं। हम उन संग्रहों के बारे में बात कर रहे हैं जो हिजकिय्याह के दरबार में किए गए थे, जो सुलैमान के बहुत बाद का समय है।

निस्संदेह, नीतिवचन की पुस्तक में मूर्ख के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है। यह मूर्ख के लिए लगभग तीन या चार अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है, उस व्यक्ति से लेकर जो कुछ हद तक भोला है से लेकर उस व्यक्ति तक जो पूरी तरह से उपहास करने वाला है, जो वास्तव में ज्ञान के विचार का तिरस्कार करता है। लेकिन नीतिवचन में एक अध्याय ऐसा है जो कुछ हद तक मूर्खों की प्रकृति और उनके तरीकों को समर्पित है।

और इसलिए, इस छोटी सी बातचीत में, हम इन लोगों के बारे में बात करने में थोड़ा समय बिताना चाहते हैं। जैसा कि हमने अपनी पिछली बातचीत में कई बार कहा है, हमें इन व्यक्तियों के बारे में यह सोचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि उनमें शिक्षा की कमी है, ज्ञान की कमी है, या बुद्धि की कमी है। यह उनकी कोई समस्या नहीं है।

वे उच्च शिक्षित हो सकते हैं। वे बहुत बुद्धिमान हो सकते हैं। उनके पास बहुत सारा ज्ञान हो सकता है, लेकिन फिर भी वे बहुत नासमझ हो सकते हैं।

वे अभी भी पूर्ण मूर्ख हो सकते हैं और गलत काम कर सकते हैं। और निःसंदेह, कभी-कभी सर्वोच्च और सबसे प्रमुख स्थानों पर बैठे लोग ही मूर्खों की इन विशेषताओं का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। लेकिन यहाँ अध्याय की शुरुआत उस श्लोक से होती है जो दर्शाता है कि किसी मूर्ख को सम्मान देना कितना अनुचित है।

ऐसा करना बिलकुल भी सही बात नहीं है। यह फसल के समय बर्फ़ और बारिश की तरह है। यह हमें उन तरीकों के बारे में भी चेतावनी देता है जिनसे कुछ चीजें हमारे लिए चिंता का विषय नहीं होनी चाहिए।

इसलिए, हमें विभिन्न तरीकों से धमकी दी जा सकती है। लेकिन अगर वे धमकियाँ और वे शाप खोखले हैं, तो यह पक्षी के झपट्टा मारने जैसा है। बेशक, मूर्ख हमें नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन हमें उन्हें नियंत्रित करने की अपनी कोशिशों के प्रति सावधान रहने की जरूरत है।

समस्या बहुत स्पष्ट है. जबरदस्ती हमेशा काम नहीं करती. आपको कभी-कभी इसकी आवश्यकता हो सकती है यदि वास्तव में, आपके पास इसके लिए प्राधिकरण है, लेकिन यह लोगों को बदलने वाला नहीं है।

यह केवल उन्हें नियंत्रित कर सकता है. लेकिन यहां कुछ छंद हैं जो हम में से कई लोगों के लिए काफी अच्छी तरह से जाने जाते हैं, नीतिवचन 26 के छंद चार और पांच एक साथ रखे गए हैं। किसी मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना, कहीं ऐसा न हो कि आप भी उसके समान व्यर्थ हो जाएं।

मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दो, ऐसा न हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ठहरे। तो जब आप किसी मूर्ख के साथ व्यवहार कर रहे हों तो इसका क्या मतलब है? क्या हमें उनसे बात करनी चाहिए या नहीं? मैं रिचर्ड डॉकिन्स और एलिस्टेयर मैकग्राथ के बीच चर्चा के साथ इन दो कहावतों को चित्रित करना पसंद करता हूं। अब, रिचर्ड डॉकिन्स, आप जानते हैं, 70 के दशक में जीवविज्ञानी थे जिन्होंने एक जीन का मानवीकरण किया, इसे स्वार्थी कहा, और फिर वहां से सभी मानव आचरण का विश्लेषण किया जैसे कि वह लोगों को पूरी तरह से समझते थे और इस विचार का मजाक उड़ाते थे कि कुछ भी हो सकता है जीवन के निर्माण और मानव लोगों के निर्माण की धारणा के लिए ताकि वे वैसे ही जिएं जैसे वे रहते हैं।

और इसलिए, वह अपनी पुस्तक द गॉड डेल्यूज़न के लिए प्रसिद्ध थे। अब, एक चीज़ जो एलिस्टेयर मैकग्राथ जैसा धर्मशास्त्री नहीं करेगा वह है रिचर्ड डॉकिन्स पर बहस करना। उनके पास बहुत दिलचस्प तीर्थयात्राएँ थीं क्योंकि डॉकिन्स एक ईसाई से एक घोषित निंदक बन गए थे, जबकि एलिस्टेयर मैकग्राथ एक संशयवादी से एक ईसाई बन गए थे।

वे बिल्कुल विपरीत दिशाओं में चले गए। मैकग्राथ ने द डॉकिन्स डेल्यूज़न नामक एक छोटी सी किताब लिखी, और उस छोटी सी किताब में उन्होंने जो कुछ किया वह यह बताया कि डॉकिन्स के सभी निष्कर्ष पूरी तरह से उन परिसरों पर आधारित थे जो उन्होंने मान लिए थे। उन्होंने माना कि जीवन का जीव विज्ञान ब्रह्मांड के भीतर ही अंतर्निहित है और इसलिए हम कोशिकाओं और उनके कार्यों के बारे में जो कुछ भी देखते हैं वह सब कुछ कोशिकाओं और उनके कार्यों के बारे में जानना है, और हम उसके अनुसार इसका विश्लेषण कर सकते हैं।

और फिर उन्होंने इसे बहुत ही बेतुके तरीके से समझाया जैसे कि कोशिकाओं के पास स्वतंत्र रूप से अपना खुद का दिमाग हो। मैकग्राथ ने बस इतना ही किया कि इनमें से कुछ धारणाओं की बेरुखी बताई गई। मैकग्राथ की पुस्तक में जो कहानियाँ हैं उनमें से एक एक छात्र के व्याख्यान में आने की है जो डॉकिन्स का भक्त था।

मैकग्राथ के व्याख्यान को सुनने का नतीजा यह हुआ कि वह क्रोधित हो गए क्योंकि जिन चीज़ों पर उन्होंने भरोसा किया था, उन्हें खत्म कर दिया गया था। उसे उसके पैरों के नीचे से निकाला गया। और इसलिए, मैकग्राथ क्या करता है? खैर, वह डॉकिन्स के मन को बदलने की कोशिश नहीं करता है।

तुम मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर नहीं देते। और स्पष्ट रूप से, उन्होंने इस छात्र के साथ कोई बहस नहीं की क्योंकि यह छात्र केवल धोखा दिए जाने की भावना पर गुस्से में प्रतिक्रिया दे रहा था, और वह उस समय इस स्थिति में नहीं था कि वह अपना मन बदल ले। लेकिन मैकग्राथ ने क्या किया? उन्होंने मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दिया क्योंकि उसने दर्शकों को बताया कि उन्हें यह जानना था कि डॉकिन्स के तर्क में क्या गलत था और ऐसा करने में वह इतना प्रभावी था कि एक डॉकिन्स भक्त को सवाल करना पड़ा, उसे यह महसूस करना पड़ा कि उसका अपना विश्वास क्या है उन्होंने इन सभी भ्रामक जैविक तर्कों को गलत बताया था।

इसलिए, ऐसे तरीके हैं जिनसे हमें उन लोगों को जवाब देने में सावधानी बरतने की ज़रूरत है जो अपना मन बदलने वाले नहीं हैं। हमारे पास अन्य कहावतें हैं जो शराबी के बारे में बताती हैं और जिस तरह से, जैसा कि हमने कविता में देखा, शराबी खुद को घायल कर लेता है। और इसके बारे में एक छोटी सी कहावत है.

मूर्ख अपनी मूर्खता दोहराते हैं. मूर्खों की अपनी-अपनी धारणाएँ होती हैं, जिनका वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। लेकिन वे खतरनाक भी हैं.

वे एक खतरनाक संदेशवाहक हैं. कहावत है, मूर्ख के पास सन्देश भेजो तो अपने ही पैर काट रहे हो। किसी मूर्ख के मुँह में कहावतें बहुत खतरनाक हो सकती हैं क्योंकि वे उनका उपयोग ऐसे तरीकों से करते हैं जो पूरी तरह से अनुचित हैं।

मूर्ख को दिया गया पद खतरनाक होता है। श्लोक एक से एक प्रकार की पुनरावृत्ति। और यहां फिर से वही विचार है कि एक तीखी और तीखी बात बहुत खतरनाक हो सकती है और जो इसे नहीं समझता है, उसके द्वारा इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

आलसी. यह दिलचस्प है। मैं अपने जीवन में अलग-अलग समय पर आलसी रहा हूँ, लेकिन बहाने बनाने में रचनात्मक हूँ।

बाहर नहीं जा सकते. सड़क पर एक शेर है. जिम्मेदारी से बचना जानते हैं.

इतने निष्क्रिय और निष्क्रिय कि उन्हें अपना पेट भी नहीं भरेगा। और फिर भी आलसी लोग सोच सकते हैं कि वे बहुत चतुर हैं। मूर्ख विवादास्पद होते हैं.

वे पक्ष लेंगे और दूसरों के झगड़ों में शामिल होंगे जहां उनका कोई काम नहीं है। वे धोखे की घातक शक्ति को नहीं समझते। वे यह समझने में असफल रहते हैं कि बदनामी या शिकायत से कितनी परेशानी होती है।

यह आग में घी डालने जैसा है. और फिर निःसंदेह कभी-कभी, आप जानते हैं, हम सोचते हैं कि धोखाधड़ी करना बुद्धिमानी है। और कभी-कभी अपने दोस्तों के साथ धोखाधड़ी करते हैं, जो सभी मूर्खों में सबसे खराब प्रकार का होता है।

चापलूसी भरी वाणी घड़े पर रखी अशुद्ध चाँदी के समान है। आप जानते हैं, मुझे हमेशा यह जानना मुश्किल लगता है कि तारीफ कैसे ली जाए क्योंकि मैं अक्सर इस बात को लेकर निश्चित नहीं होता कि कोई सिर्फ इसलिए अच्छा बन रहा है क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत है या कोई ऐसा कुछ कह रहा है जिसे वे वास्तव में सच मानते हैं। लेकिन अक्सर, हम बस ऐसी बातें कह रहे होते हैं जो अच्छी होती हैं ताकि किसी प्रकार की प्रतिक्रिया तैयार करने का प्रयास किया जा सके जिसकी हम तलाश कर रहे हैं।

हमें सावधान रहना होगा कि हम चापलूसी पर भरोसा न करें और धोखे से छिपी नफरत से सावधान रहें। अंततः, झूठे लोग वास्तव में उन लोगों से नफरत करते हैं जिनका वे दुरुपयोग करते हैं। इसलिए हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि भाषण और बातचीत हमेशा वैसी नहीं होती जैसी दिखती है।

मूर्ख इन चीजों का उपयोग इस तरह से करने में बहुत चतुर होते हैं जो हर किसी के लिए हानिकारक होते हैं, विशेष रूप से स्वयं के लिए। इसलिए, जब मूर्खों के व्यवहार के तरीकों के बारे में सोचने की बात आती है तो नीतिवचन 26 वास्तव में हमें विचार करने के लिए बहुत कुछ देता है। और दुर्भाग्य से, कुछ प्रवृत्तियाँ हम सभी में हो सकती हैं।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 16 है, मूर्खों के साथ रहना, नीतिवचन 26।